

B 091

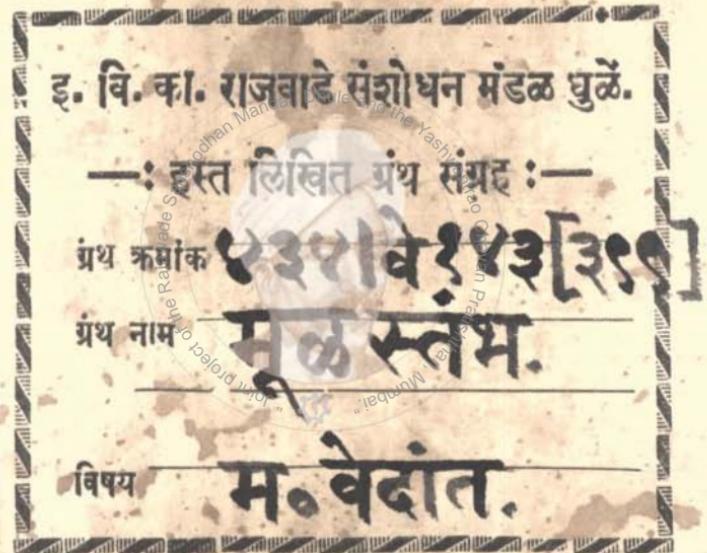
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुर्णे.

—०१०३२४ वृ०१०३२४

ग्रंथ क्रमांक

मुलस्तम्

विषय म० वेदांत.

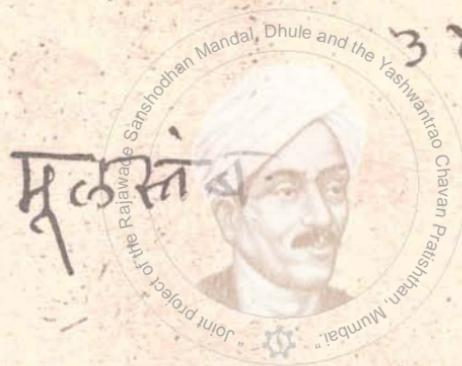


मराठी

कांडे

३२३

कुटी



२३८ फृ १८२

४१८

(1)

॥ मुल संसार द्या प्रसं लाग ॥ १ ॥ परम  
॥ प्रभो माहिरा ॥ २ ॥ ज्ञानक १६२ ॥ २०  
॥ हीतीयो द्या प्रा ॥ ३ ॥ ज्ञानक ४० ॥ ८  
॥ वितीयो द्या प्रा ॥ ४ ॥ ज्ञानक ५४ ॥ ८  
॥ चतुर्थ द्या प्रा ॥ ५ ॥ ज्ञानक ९९ ॥ २  
॥ पंचमा द्या प्रा ॥ ६ ॥ ज्ञानक ९९२ ॥ ११  
॥ षष्ठमा द्या प्रा ॥ ७ ॥ ज्ञानक ८० ॥ ८  
॥ सप्तमा द्या प्रा ॥ ८ ॥ ज्ञानक ५२ ॥ ८

Digitized by srujanika@gmail.com

(2)  
श्रीगणेशमाः श्रीमत्नामाघतंसः ॥ आत्मन्  
भीनदेव ईश्वरः ॥ ज्ञानीरज्ञापत्तीमठोऽन् ॥ तोवंडी  
न ईश्वरः ॥ व्याहीपुरुषः ॥ १ ॥ बोनमोजीसदाविवी  
स्तोहुं मुतीपरतवा ॥ स्तोवा संक्षुभाहुदेवा ॥ नम  
नमामः ॥ २ ॥ ऊमज्जयीगणनाथा ॥ देमपुरुष  
अवलका ॥ ब्रह्मादीकासर्वथा ॥ नक्कलेसीतुं ॥ ३ ॥ तु  
नीवीकाननीनोजन् ॥ वीम्बवा पक्कुजेज्जीवन्  
पंमास्त्रासुनुः तोचीतुं ॥ ४ ॥ देवा हुचीनमनाङ्गी

(2A)

करा ॥ पंचमुख परमेश्वरा ॥ अरादीनाश्राकर्त्तु  
 गोश ॥ नीरंजनरुपा ॥ पा ॥ तुर्सेष्वार्थगीकार्वतीः  
 मुगर्हींगंगानपवती ॥ तौद्युगुलास्तिकमुती ॥ दे  
 वात् ॥ धाजमाच्छ्रुमिलक्खारी ॥ तौद्युद्वासुज  
 घुर्जेती ॥ झोडा वहसुकंठी ॥ अरछंकान ॥ उ ॥ अ  
 गीवीसुन्तीचेत्थलन ॥ व्याघ्रांबराचेपाच्छुरन  
 लक्खारीचदन ॥ झंसुतुज ॥ ८ ॥ तुर्सेहस्तनांगी

(3)

३॥

चतुरानन्दं ॥ जन्मपावला ब्रह्माद्यरन्ते ॥ वासा  
गीवीष्टु नारायनं ॥ जन्मला पैः ॥ अनुब्रह्मा वी  
स्थु महेश्वरं ॥ ये कम्तो यदमहस्यं ॥ तीं गाइजाला सि  
ध्यं स्मृ ॥ आदी पुकारा ॥ १० ॥ कवनजाने तुम्ही रबोली ॥  
सप्तपात्तालपात्तुलेनोली ॥ वेदतुराने श्रमणी ॥ ११ ॥  
तांकुज ॥ ११ ॥ ये कवी भस्त्रावशी ॥ तुसामुगुरगा  
त्रीपुरानी ॥ कवनजाने तुम्ही ओरी ॥ दैवताया ॥ १२ ॥  
असादेव इन्द्रजन ॥ अलंकृत्यपरं परं ॥ खस्त्रादीकं

(3A)

वागोचक ॥ तुझी मस्तक पाचा पाज ॥ नक लेक बना ॥  
 ॥ १८ ॥ पृथ्वी मकही खड़ी साले का ॥ खाका डाली गमुती  
 दरवा ॥ तमाक कीला सता रका ॥ मुजाके सी ॥ १९ ॥ म  
 घमाला बन डाती ॥ तें तुझ न हे गप श्रुतते ॥ नव छस  
 तरांग ने डोकरती ॥ चुड़े पंचुजा ॥ ऐसाए बईस रा ॥  
 नीला रसु पर मेस्वर ॥ तुझान कले पाक ॥ ब्रह्मादीका ॥  
 ॥ २० ॥ साहित नका डाती ॥ घर रना घन बाद ती ॥ अ  
 नीवेद बीन ती ॥ कारहा तुनही शरा ॥ २१ ॥ परी तुलसी

वी

Prince Rajawade Sevinchan Murali, India and the  
 Royal Gavani Project  
 Digital Pragati  
 Department of Information and  
 Public Relations  
 Government of Maharashtra  
 Mumbai - 400 020

(4)

नमस्तीकरना॥ भ्रांतीदातली मकल ही उज्ज्वा॥ उग  
 डीवना ईश्वरा व्या॥ स्वाहा कारी हुं॥ १८॥ ऐसा बोबडा  
 बचनी॥ म्यान मीला इरपा घाटी॥ द्वांता करीत से  
 कीन बनी॥ ओत मासि॥ १९॥ जीजी मीद्यान इसा भु  
 डा॥ मद्दसत्ती प्रकाइ आठा॥ मासा बोल बोबडा॥ २०॥  
 शिसा बाहु मही॥ २१॥ तुहु दी ओते सम्पान॥ माहा मेही क  
 वीचहून॥ तुहु पुढें बोल तां बचन॥ अतित असे॥ २२॥  
 तुहु जश्च परकराल॥ चीत हृउनी पनी साल॥

॥३॥

(4A)

न ती मी बोल न बोल ॥ अहमामी कु ॥ २३ ॥ मागुंभा  
 नाम सुल ज्ञान ॥ ईस्वर कार्वती संवाद ॥ दोहि न व्य  
 नु वाद ॥ परी सरा बाडी ॥ २४ ॥ पार्वती होये पुस्ती ॥  
 ईस्वर देव सांगती ॥ पीडु बुझो उची स्थिती ॥ बोल  
 ती व्याजां ॥ २५ ॥ मृनेवादी पुस्ति ॥ वास्त्रमारी संन  
 स ॥ श्रीमाही मामा प्रकाङ्का ॥ दावील व्याजां ॥ २६ ॥ दे  
 ल कवीला मात्ता शीरवज्ञी ॥ कार्वती सहीत त्रीपुराणी  
 व्याज दे पुस्ती जाली गोनी ॥ तीवा प्रती ॥ २७ ॥ क

(5)

रजोऽनीकशीवीनन्ती ॥ होउतीदेवानीजमुती ॥ नीरा  
 काराचीस्थौती ॥ स्त्रागमस्त्रा ॥ ३७ ॥ नीताकाशचीमा  
 रुखामा ॥ स्त्रागमउतीदेवात्रीनमन्त्रा ॥ कैस्त्रिउतालीर  
 चन्त्रा ॥ चराचरहेहे ॥ २८ ॥ तदंसूजातीदेवकुलपर्णः ॥ ४ ॥  
 अकेंगोशीचीतदृउती ॥ प्रभ्रममुलारेवापासुनीः  
 सोगनतुज ॥ ३८ ॥ जाहीपवनछान्तीपानी ॥ आ  
 काङ्गानाहीमेदनी ॥ चेद्यमुर्द्योकी ॥ नकहेहे ॥ ३९ ॥  
 नाहीस्वर्गमेकवीस ॥ जन्मनाहीसंप्राप्तालास ॥

Rajawade Se Se Shashin Mandal, Dholi and the Yantra of  
 the Profound Mystery, Mural Painting, Manuscript  
 and Sculpture

(5A)

स्वेष माला न क्षमां द्वा ॥ तावो चीना है ॥ ३१ ॥ नाही उड  
 द्वाक्षी तीर्थे ॥ न कृती पंचमा भूमि हो ॥ अवधे शुन्दर हो तें  
 नीकाकार ॥ ३२ ॥ नाही जस्त स प्रुद ॥ गीकी पर्वत महीद ॥  
 न कृते बुझा वीज्युन द ॥ तीनी नीढ़े ॥ ३३ ॥ नाही मन  
 बुद्धी दोकार ॥ चीत वे तन्मनी न कार ॥ सप्तष्ठीये  
 मन मादार ॥ नही न कृती ॥ ३४ ॥ नाही नाद नांदीदः  
 कला जो तीवर्तके द ॥ न कृती वाचाद ॥ होते नीरस  
 नी ॥ ३५ ॥ नाही उपते जपृष्ठी ॥ वायो जाघर कांड

Jaico Publishing House  
 Manual, Dust and the  
 Profound Meaning of  
 the Bhagavad Gita

६  
मोन्नी॥ तें नीर कार बुझी॥ वर्तत व्यसे॥ ३८॥ नकहती  
चतुर रखा धी॥ सकल बुझी हो उन्नी॥ इस्त्र पुरान  
वेद वानी॥ नीर कार व्यासे॥ ३९॥ ऐसा और धारी  
नीर कार॥ सामाजी मेक आकाश॥ मज़पाहाजांसा कार॥  
त्रीभुवन है॥ ३१॥ मीतो ची नीर काश॥ सुन्दरी छाँ  
पपर मेखन॥ मज़पन ताजाक॥ छानी कनाही॥ ३५॥  
सुन्दर तेजी साकान लें॥ स्वयं ब्रह्म चीनी सतार लें॥ मासं  
स्वरूप आलें॥ एक बी सद वी॥ ४०॥ तवं मृत त व्यसे गी

Digitized by Samskruti Manohar and the Varshavarti  
Digitized by Samskruti Manohar and the Varshavarti  
Digitized by Samskruti Manohar and the Varshavarti

शिजा॥ की वेचना करनी बोजा॥ ४५॥ हो जी देवा सं  
 कुराजा॥ सांगा स्वामी॥ ४६॥ पांचा त्राची इच्छा  
 जाली जगजी बना॥ कबन त्रृकवना॥ पासुनी  
 जाली॥ ४७॥ मग ईस्त्रिर दव बोलती॥ एकी नेंसी गी  
 शिजे बाकी॥ पेच मुक्ताची बिस्तती॥ हांगन आतां॥  
 ४८॥ प्रश्न सुन्य बुझा पासुनी आ काढा जाले तेषु  
 नी॥ तेसर्वजनाव्यशोनी॥ होउनी रेले॥ ४९॥ मुन्ये  
 आछेगगनाते॥ पवन आले तेजा ते॥ जानी जेसु॥ ५०॥

(७)

ते जव्या लें आपाते ॥ आप व्याले पृथ्वीते ॥ ऐसी पशी पं  
चमुहते ॥ जन्म ली पाही गद्य ॥ ऐसी पंचतत्त्वं नीपजली  
ये कंपकाते प्रसवली ॥ मापा सुन जाठी सुत सुही ॥

॥४५॥ आधी पंचमुहती करनी लें ॥ मगहे बरावर जा  
ले ॥ प्रेमतत्त्वी स्तानी ले ॥ संकटां ई ॥ ४६॥ प्रेमतत्त्व  
जान ॥ मारेनी जरुप द्वान ॥ तें पांचा चंजन्म सु  
न ॥ प्रथम ताते ॥ ४७॥ तें पांचा नहाचे मुल ॥ तें प्रेम  
तत्त्व केवल ॥ तमापा सुनी सकल ॥ तत्त्वं जाली ॥ ५०॥

Digitized by srujanika@gmail.com

तवं हेमवं ताचीकुमरी ॥ पावित्री वीनती करी ॥  
 मृने ईस्त्रा अवधारी ॥ पुष्टुं मासा ॥ ५७ ॥ सापां  
 चातहाचेउपना ॥ तुम्ही जागी तच्छुलक्षण ॥  
 आतांपांचा तहाचे पचवीसगुन ॥ सांगीजेजी ॥ ५८  
 एकयेका तहाचारी चारा ॥ घरम्हा सांगाजी बा  
 गरु ॥ तोदरववाजी पदरे पदरु ॥ उकलुनीयाः  
 ॥ ५९ ॥ मगमृन तीलें जगन्नाथें ॥ गोरी परी मेंसि  
 यकचीतें ॥ यथी चीवी वंचना तुनें ॥ सोगी जै ला ॥ ५८

© Rajmohne Sanochan Mandal, Odile and the  
 Royal Library of Belgium  
 2000 Odile et la  
 Bibliothèque royale de Belgique

(8)

७॥

ये कथे कापसु नीजा ले पांच पांच गुण॥ ये सेवे पं  
 च बीस मीठों नी॥ जनि रहे॥ ५५॥ सर जनि राजीत  
 नी॥ गुन वर्तती परमपरा॥ ते सांग ले ती व्यावृ  
 धा नी॥ अर्इ करी फिलं॥ ५६॥ अस्तीत डीमैं  
 स॥ वृक्षा व्यानी केक॥ हरचहु गुन परीय सी॥  
 पृथ्वी तवाचे॥ ५७॥ कुल सुकुमीत झोकी त॥ मुत्र  
 ब्रह्म बीर व्यांत॥ हं पांच हं गुन बीम्हांत॥ आ  
 पत व्याचे॥ ५८॥ नीझा ताहान सुक॥ आल स पंच  
 वें सुख॥ हं पांच गुण देख॥ तेज तवाचे॥ ५९॥

"Joint Project of the Rashtriya Sanskrit Sansthan,  
 Shodha Vibhag, Deemed University, New Delhi  
 and  
 Odisha Sahitya Akademi, Bhubaneswar"

५॥

व्यलनवलनप्राकोचन॥ परसरनतीजोधन॥ हें पो  
 चहीमुनजान॥ वायोत्ताचं॥ (८०)। लज्जामोहो  
 मध्ये॥ नागझातीहोम्॥ हें पांचहीमुनपाहें॥  
 व्याकाङ्गात्तव्याचं॥ (८१)। वेसापंचत्वाचावि  
 चारन॥ पंचकीसमुन्नायाप्रकार॥ सरंगीतल  
 नीधर्मिक॥ गीरजेहन॥ (८२)। तवंभानीमिव पु  
 सपर्वती॥ देवाव्यवधीत्वंकीती॥ मान्दीके  
 डाकीमुंती॥ प्राननरभा॥ (८३)। मगमृष्टीदेवमहेश॥

"Jor Dales of Mandar, Dhule and the Bhawani Chavhan Shilpa Sahayam"  
 "Mandal, Dhule and the Bhawani Chavhan Shilpa Sahayam"

१)

देवीवरवीत्वेंद्येतीस्॥ वुजसांगीतबीती  
 स॥ उराष्ट्रीकं नीकं साहाया सती॥ द्योया व  
 तीकृनतीलें उमने॥ इवासाहात्वेंतं कवने॥  
 नाउलें नीगोपने॥ छपाकुद्योगध्या॥ मगमृनती  
 आन्ताद्विस्थिथ॥ जाम्बुस्पद्गुभक्षपगध्या॥ हुं पा  
 चत्वपुस्थिथ॥ जानदेवी॥ द्युङ्गाङ्गुनव्या  
 काङ्गाच्चा॥ स्पद्गुनवाग्नेच्चा॥ रुपगुनतेजा  
 च्चा॥ जानीजेसु॥ द्यु॥ तसमगुनव्यापाच्चा॥ गंध

५।

॥८॥

The Rajawade Sen  
 Indian Mandar, Chitra and the Yashoda  
 series, Printed  
 by the  
 Munshi  
 Press  
 Patna

कुल

(१९)

लुन पृथ्वी चा ॥ ऐसा पंचत हा चा ॥ वी सारदेवी  
 ॥६॥ गीरजे पंचती ज्ञा ॥ औस्ती जाली पंचती मः  
 सा हा वैत हृप दी यस ॥ आगा चरते ॥७॥ प्रेमत  
 कृ छती सावे जा न ॥ अवधी यांत हौच मुल  
 स्थान ॥ तें श्री गुरु लप किया ॥ ननी छेतं ॥८॥  
 औसा ती मांत हा चा मे लुग्हा पीड इची मला  
 गोला ॥ तवं हे मवंता की बाला ॥ आनी कपुसं ॥  
 ॥९॥ एहो जांमुउ मार मनु ॥ आसु वीषी आई

Sanskrit Manuscript Project  
 Rajeshwar Mandal, Dhule and the  
 Department of Archaeology and  
 Museums, Government of Maharashtra

(१०)

।१०।

केचीनदेउनु॥ पार्वतीकायप्रव्या॥ करीती  
जाठी॥ ७८॥ नवंजादीज्ञाकीयं बीका॥ पुसेक  
बीमनायका॥ हेकीडीवीह्यनुका॥ सांगास्ता  
मी॥ ७९॥ व्याहोज्जीदेवाचक्रमोली॥ नुसविया  
पकुसकठी॥ मज्जागरागभीवोली॥ हफ  
क्षकनी॥ ८०॥ मगहुपातीत्रिपुराती॥ दवीये  
काघमनकडी॥ पीडीवीहीसुतीयवधारी॥  
सांगनकुज॥ ८१॥ व्यस्त्रीपुकडोमीलती॥ आ

॥८१॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)